होली की व्रत कथा Holi Ki Vrat Katha in Hindi PDF

pdfinhi

प्राचीन काल में अत्याचारी दैत्यराज हिरण्यकश्यप ने तपस्या कर ब्रह्मा से वरदान प्राप्त किया था कि कोई भी प्राणी, देवता, दानव या मनुष्य उसे मार नहीं सकता।

न तो वह रात में मरा, न दिन में, न पृथ्वी पर, न आकाश में, न घर में, न बाहर। यहां तक कि कोई हथियार भी उसे नहीं मार सकता था।
ऐसा वरदान पाकर वह अत्यंत निरंकुश हो गया।

हिरण्यकश्यप के यहां प्रह्लाद जैसा धर्मपरायण पुत्र पैदा हुआ, जिसका ईश्वर में अटूट विश्वास था। प्रहलाद भगवान विष्णु के अनन्य भक्त थे और भगवान विष्णु ने उन्हें आशीर्वाद दिया था।

हिरण्यकश्यप ने प्रहलाद को आदेश दिया कि वह उसके अलावा किसी की प्रशंसा न करे। प्रह्लाद की अवज्ञा पर हिरण्यकश्यप ने उसे मारने का निश्चय किया।

उसने प्रह्लाद को मारने के लिए कई तरह की कोशिश की लेकिन वह भगवान की कृपा से बचता

pdfinbox.com

रहा। हिरण्यकश्यप की बहन होलिका को आग से बचने का वरदान प्राप्त था। उसे वरदान था कि वह आग में नहीं जलेगी।

हिरण्यकशिपु ने अपनी बहन होलिका की मदद से प्रह्लाद को आग में जलाकर मारने की योजना बनाई। होलिका बालक प्रह्लाद को गोद में जलाने के उद्देश्य से आग में बैठ गई। भगवान की कृपा से होलिका वहीं जलकर राख हो गई। इस प्रकार प्रह्लाद को मारने के प्रयास में होलिका की मृत्यु हो गई।

तत्पश्चात् हिरण्यकश्यप को मारने के लिए नारण सिंह अवतार में भगवान विष्णु स्तम्भ से बाहर आए और अत्याचारी हिरण्यकश्यप को गोधूलि काल (सुबह और शाम के गोधूलि काल) में दरवाजे की दहलीज पर बैठाकर मार डाला। तभी से होली का त्योहार मनाया जाने लगा।

Pdfinbox.com

pdfinbox.com